eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

[1]कृष्ण कुमार जायसवाल
[1]बी.एड. विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर उ0प्र0

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

शिक्षा में सफलता पाने और शिक्षा के माध्यम से जीवन में सफलता पाने के लिए विद्यार्थियों में उच्च कोटि की शैक्षिक अभिप्रेरणा नितांत आवश्यक है। परंतु सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा को भी प्रभावित करती हैं। इसलिए शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन में विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण से निम्न, मध्यम और उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह शोध किया गया।शोध में मात्रात्मक उपागम और सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया। कोटा प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए कुशीनगर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों (प्रत्येक स्तर से 40 विद्यार्थी) का चयन किया गया।आंकड़ों के विश्लेषण के बाद निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शैक्षिक अभिप्रेरणा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले परिवारों के विद्यार्थियों में सबसे कम है। मध्यम परिवारों के विद्यार्थियों में थोड़ी अधिक और उच्च स्तरीय घरों के विद्यार्थियों में तुलनात्मक रूप से सर्वाधिक है। यहां पर भी वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव देखने को मिलता है।जैसे कुछ निम्न वर्गीय विद्यार्थियों में अच्छी शैक्षिक अभिप्रेरणा पाई गई। पर इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है।भारत की अधिकांश जनसंख्या निम्न और मध्यम वर्ग की है। अतः इन वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षकों, अभिवावकों, विद्यालय प्रबंध तंत्र,राज्य और राष्ट्रीय शिक्षा प्रशासन द्वारा प्रोत्साहन,सहयोग और सतत अभिप्रेरणा की आवश्यकता है।

शब्द संक्षेप– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शैक्षिक अभिप्रेरणा, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर, मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर।

Introduction

कोई एक चीज जो व्यक्ति को समाज में पहचान दिला सकती है,सम्मान दिला सकती है, साथ ही उसके आर्थिक स्तर को बढ़ा सकती है तो वह है 'शिक्षा, इसीलिए शिक्षा को उर्ध्वमुखी गतिशीलता का सशक्त माध्यम माना जाता है।ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिसमें निम्न या मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के व्यक्तियों ने अच्छी शिक्षा प्राप्त कर अपने स्तर का उन्नयन कर समाज में नाम रोशन किय। जैसे– अब्राहम लिंकन,लाल बहादुर शास्त्री, डा.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, डॉ भीम राव अम्बेडकर, डा. वर्गीस कुरियन, कैलाश सत्यार्थी, कल्पना चावला आदि पर इस स्तर की शिक्षा पाने के लिए विद्यार्थी में उच्च कोटि की शैक्षिक अभिप्रेरणा होनी आवश्यक है। वस्तुतः अभिप्रेरणा एक आंतरिक बल है जो शिक्षार्थी को एक विशिष्ट दिशा में कार्य करने के लिए सतत क्रियाशील रखती है। अच्छी शिक्षा पाने के लिए विद्यार्थी में एक आंतरिक बल होना चाहिए जो उसे लक्ष्य की तरफ गतिशील रखे। लेकिन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

प्रायः देखा जाता है कि निम्न और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थी शिक्षा के प्रति उतने जागरुक नहीं हो पाते। जबकि उच्च स्तर के विद्यार्थी कहीं ज्यादा जागरूक होते हैं। इसके अनेक कारण हैं।

पहला– शैक्षिक संसाधनों, गुणवत्तापूर्ण विद्यालय,सुव्यवस्थित कक्षाएं, ट्यूशन, कोचिंग सेवायें, पाठ्य सामग्रियों आदि की सुलभता उच्च स्तर के विद्यार्थियों के पास अधिक होती है।

दूसरा– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों के मां–बाप भी पढ़े–लिखे होते हैं। वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए अभिप्रेरित करते रहते हैं।अन्य अनेक कारण हैं।इनके बावजूद यह भी देखा जाता है कि कई निम्न या मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थी में भी शैक्षिक अभिप्रेरणा उच्च स्तर की पाई जाती है और वो आगे जाकर सफल भी होते हैं, जबकि कई उच्च स्तर के विद्यार्थी भी शिक्षा से मुहं चुराते हैं। 'तो क्या सचमुच सामाजिक– आर्थिक स्तर का शैक्षिक अभिप्रेरणा पर प्रभाव पड़ता है?– यह जानने हेतु शोधार्थी द्वारा एक लघु शोध किया गया। इसका विवरण अग्रांकित है।

समस्या कथन– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना"

शोध–शीर्षक के अंतर्गत आए हुए पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएं–

1.शैक्षिक अभिप्रेरणा– 'अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो व्यक्ति को किसी निश्चित लक्ष्य की तरफ उन्मुख करती है और उसे लक्ष्य पाने तक गतिशील रखती है।

'In psychology, we define motivation as an hypothetical internal proces that provides the energy for behaviour and directs it towards a specific goal."- 'Baron, Byrne and Kantowitz, 'Psychology' (1980) p.33

शैक्षिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य विद्यार्थी की शिक्षा पाने के लिए आंतरिक ललक से है। यह शोध में आश्रित चर के रूप में उपयोग किया गया है।

2. सामाजिक आर्थिक स्तर– प्रस्तुत शोध में प्रयोज्यों को उनके पैतृक सामाजिक स्तर और आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर तीन वर्गों में बांटा गया है।

1.निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी (LSES)
2.मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी (MSES)
3.उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी (HSES)
सामाजिक–आर्थिक स्तर को स्वतंत्र चर के रूप में प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध के उददेश्य–

1. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएं–

1. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों (माध्यमिक स्तर के) की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों (माध्यमिक स्तर के) की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।
3.उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों (माध्यमिक स्तर के)
की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नही है।

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा–

शोध उपागम– प्रस्तुत शोध में मात्रात्मक उपागम का प्रयोग किया गया है।
शोध का प्रकार– वर्णनात्मक
शोध विधि– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
प्रतिदर्श– प्रस्तुत शोध में कोटा न्यादर्श विधि से 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्याथी	उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी
40	40	40

शोध उपकरण – 1. सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी–डॉ बीना शाह (शिक्षा संकाय, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल)

2. शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी– डॉ. प्रतीक उपाध्याय

विश्लेषण विधि– प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण–

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

सारणी–प्रथम

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर (L.S.E.S.) और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर (M.S.E.S.)वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

न्यादर्श	N	M	o	D	oD	t
L.S.E.S.	40	45	2.45	43	1.731	4.22
M.S.E.S.	40	67				

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी परीक्षण पर प्राप्त मान 4.22 है।यह मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात निम्न और मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है। इस आधार पर प्रथम शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

सारणी–द्वितीय

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर (H.S.E.S.) और मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर (M.S.E.S.) वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

न्यादर्श	n	M	o	D	oD	t
H.S.E.S.	40	88	07.071	22	04.99	04.40
M.S.E.S.	40	67				

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी परीक्षण पर प्राप्त मान 4.40 है। यह मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात उच्च और मध्यम सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है। इस आधार पर दूसरी शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

सारणी–तृतीय

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर (H.S.E.S.) और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर (L.S.E.S.)वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

न्यादर्श	n	M	o	D	oD	t
H.S.E.S.	40	88	10.7	21	7.614	9.718
L.S.E.S.	40	45				

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि t परीक्षण पर प्राप्त मान 9.718 है। यह मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात उच्च और निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है।इस आधार पर तीसरी शून्य परिकल्पना भी निरस्त की जाती है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

निष्कर्ष और प्राप्त परिणामों की व्याख्या–

उपर्युक्त अध्ययन पर प्राप्त आंकड़ों के विवेचन के आधार पर हमे तीन प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

1. माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों में मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले घरों से आने वाले विद्यार्थियों की तुलना में कम शैक्षिक अभिप्रेरणा पाई गई है। अर्थात सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव शिक्षा पर पड़ रहा है।

2. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों में मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले घरों से आने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक अभिप्रेरणा पाई गई है। अर्थात यहां भी सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव शिक्षा पर पड़ रहा है।

3. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों में उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले घरों से आने वाले विद्यार्थियों की तुलना में बहुत कम शैक्षिक अभिप्रेरणा पाई गई है। यहां सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव ज्यादा और स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शैक्षिक अभिप्रेरणा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों के विद्यार्थियों में सबसे कम है। मध्यम परिवारों के विद्यार्थियों में थोड़ी अधिक और उच्च स्तरीय घरों के विद्यार्थियों में तुलनात्मक रूप से सर्वाधिक। यहां पर भी वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव देखने को मिलता है। जैसे कुछ निम्न वर्गीय विद्यार्थियों में अच्छी शैक्षिक अभिप्रेरणा पाई गई पर इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है।

प्रस्तुत शोध का शिक्षा में महत्व–

प्रस्तुत शोध भारतीय शिक्षा के नीति निर्धारकों के साथ–साथ शिक्षाशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, अभिवावकों, विद्यालय प्रबंधतंत्र एवं शिक्षकों सभी के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में लगभग 25% जनसंख्या आज भी गरीबी रेखा से नीचे है। नीति–निर्धारकों द्वारा ऐसी नीति का निर्माण किया जाना आवश्यक है, जिससे निम्न स्तरीय परिवारों के विद्यार्थियों को भी समान शैक्षिक अवसर मिल सके। विद्यालय प्रबंधन द्वारा इन्हें शुल्क मुक्ति और अन्य सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। अभिवावकों और शिक्षकों द्वारा निम्न और मध्यम वर्गीय विद्यार्थियों को सतत अभिप्रेरित किये जाने की आवश्यकता है, जिससे 'शिक्षा के प्रति उनमें लगन, आस्था और मनोबल बना रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

(1) गुप्ता, एस.पी. (2017), 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान', शारदा पुस्तक

भवन, इलाहाबाद ।

(2) सिंह, अरुण कुमार (2015), 'शिक्षा मनोविज्ञान', भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), पटना।

(3) गुप्ता, एस. पी.,(2003), 'आधुनिक मापन और मूल्यांकन',शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।

(4) गैरेट हेनरी ई. (1989), 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग' कल्याणी पब्लिशर्स,नई दिल्ली।

(5) भार्गव महेश– 'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन' ।

(6) Baron, Robert A. (2001), 'Psychology', (5th Edition) New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

(7) Best, John W. (2006), 'Research in Education' (9th Edition), Pearson, Prentice Hall.

(8) Cattel R.B. (1957) 'Personality and motivation', New York, Harcourt.

(9) Maslow, A.H. (1954), 'Motivation and Personality', New York, Harper and Row.

(10) Mangal, S.K. (1993), 'Advanced Educational Psychology', Prentice Hall of India, New Delhi.

(11½ Skinner, C.E. (1977), 'Educational Psychology', Prentice Hall India Learning Private Limited.